International Journal of Research in Social Science
Vol. 12 Issue 06, June 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आधुनिकता के भंवर में जनजाति साहित्य, भाषा एवं संस्कृति

सुनीता बारिया, शोधार्थी
हिन्दी विभाग
माधव विश्वविद्यालय, आबुरोड़ सिरोही (राज.)

दक्षिणी राजस्थान की जनजातियां भारत की आदिम जनजातियां है। दक्षिणी राजस्थान में भील, मीणा, गरासिया, डामोर, जनजाति की अपनी विलक्षण सांस्कृतिक धरोहर है जिसके कारण इनकी विशिष्ट पहचान है। जनजातियों की संस्कृति से हमें देश की मूल प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के दर्शन होते है जो आज मृत प्रायः हो गई है। विभिन्न भागों में निवास करने वाली प्रत्येक जनजाति समुदाय की अपनी अलग –अलग सांस्कृतिक पहचान है तथा इनके रीति–रिवाज, सांस्कृतिक आचार–व्यवहार एवं पर्व मनाने के तरीके भी भिन्न है। अपने विशिष्ट देवी–देवता, पूजा पद्धति, पहनावा, भाषा, संस्कार, उत्सव, नृत्य, परम्परायें, प्रथायें, मेले, सजने–सवरने का तरीका भी भिन्न–भिन्न होता हैं, जो क्षेत्र विशेष को एक अलग पहचान प्रदान करता है।

आधुनिकता शब्द आमतौर पर उत्तर–पारम्परिक, उत्तर–मध्ययुगीन ऐतिहासिक अवधि को सन्दर्भित करता है, जो सामन्तवाद से पूंजीवाद, औद्योगीकरण धर्मनिरपेक्षवाद, युक्तिकरण, राष्ट्र–राज्य और उसकी घटक संस्थाओं तथा निगरानी के प्रकारों की ओर कदम बढ़ाने से चिन्हित होता है। बार्कर की अवधारणा के आधार पर, आधुनिकता का सम्बन्ध आधुनिक युग और आधुनिकता से है, लेकिन यह एक विशिष्ट अवधारणा का निर्माण करती है। आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की वह प्रक्रिया है, जिससे कम विकसित समाज विकसित समाजों की सामान्य विशेषताओं को प्राप्त करते हैं।

भारतीय समाज व्यवस्था की कथित मुख्य धारा से अलग–अलग दुर्गम जंगलों, बीहट वनों, पहाड़ों और प्रकृति की खुशनुमा गोद में हजारों वर्षों से जीवनयापन करने वाले आदिवासियों की अलग ही दुनिया है। आदिवासी समाज प्रकृति का पुजारी होता है। प्रकृति ही उनके सुख–दुःख की सहचरी होती है, लेकिन वैश्वीकरण के कारण उनको जल, जंगल, जमीन से अलग किया जा रहा है। जिसके कारण आदिवासी समाज

अशांति की और जा रहा है। आदिवासी समाज पर हो रहे वैश्वीकरण के दुष्प्रभावों का वर्णन विविध साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के समक्ष प्रकट किया है। आदिवासी समुदाय के लिए वैश्वीकरण विकास का मार्ग नहीं बल्कि विस्थापन का मार्ग है। आदिवासी प्रकृति से जुड़े हुए है, जीवन का हर– पल प्रकृति के साथ व्यतीत होता है. लेकिन वैश्वीकरण के कारण उनके इलाके के पहाड़ टूट रहे है। झरने नालों में परिवर्तित हो रहे है।

भारतीय आदिवासी समाज जो अभी आधुनिक समाज को समझ नहीं पाया वह अभी तक समाज के विकास से वंचित है। इस पर एकाएक वैश्वीकरण का क्रम शुरू हो गया है। यह समाज का एक ऐसा निरीह अविकसित वर्ग है जो राष्ट्र की मुख्य भाग के साथ जुड़ना नहीं चाहता, क्योंकि प्रकृति के जीवन से दूर यह जाना नहीं चाहते। नई आर्थिक नीतियों से हमारी सरकारों और उद्योगपतियों को विकास के नाम पर आदिवासियों को लुटने की खुली छूट मिल गई है। देश भर के आदिवासियों ने इस खुली छूट को अलग–अलग तरीको से चुनौती भी दी है। आदिवासियों ने अपने अदम्य साहस एवं शौर्य से सरकार द्वारा बनाई गई इस दमनकारी नीतियों का विरोध किया।

वैश्वीकरण के इस दौर में आदिवासी समाज के सामने अपने अस्तित्व का संकट गहराता जा रहा है। उन्हें जल, जंगल, जमीन से हटाने का प्रयास किया जा रहा है। आदिवासियों के जंगल, जमीनों, कस्बों, संसाधनों पर कब्जा कर उन्हें दर–दर भटकने के लिए मजबूर करने के पीछे मुख्य कारण हमारी सरकारी व्यवस्था रही है। वे केवल अपने जंगलों, जमीनों, कस्बों, संसाधनों से ही बेदखल नहीं हुए बल्कि मूल्यों, नैतिक, अवधारणाओं, जीवन शैलियों, भाषाओं एवं संस्कृति से भी बेदखल आज भी वह हजारों साल पुरानी परम्पराओं के साथ जी रहा है। आदिवासी समाज भी समानता के साथ जीना चाहता है लेकिन विकृत मानसिकता वाले लोग उन्हें अशिक्षित और असभ्य कहकर उनका शोषण कर रहे है। आज धर्म के नाम पर धर्मान्धता भयानक रूप धारण कर रही है।

भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है और अपने सुख–दुःख की अनुभूति करता है, लेकिन आज आधुनिकता के दौर में आदिवासी भाषा को असभ्य कह कर उसे खत्म करने का पूर्ण प्रयास जारी है। निर्मला पुतुल के अनुसार आदिवासी भाषा को मिटा देना जिसमें संघर्ष की चेतना जीवित है।

यदि उनकी भाषा ही खत्म हो गई तो आदिवासी समाज की पहचान भी समाप्त हो जाएगी। आधुनिक विश्व में ग्लोबलाइजेशन अवधारणा का प्रचार वैश्विक कुटुंब के रूप में हुआ है। विश्व के राष्ट्रों की आवश्यकता या स्वार्थ ने आखिरकार औपनिवेशिक काल के पश्चात विकासशील व गरीब देश की और एक बार पुनः रुख करने को बाध्य किया। वैश्वीकरण ने प्रत्येक पहलू को गहराई से प्रभावित किया।

आज आदिवासी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति की तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वस्तुतः आदिवासी समाज से संवाद स्थापित करने में आदिवासी साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आदिवासी साहित्य को आदिवासी और गैर आदिवासी दोनों ने लिखा है। अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से आदिवासी समाज की पीडा, शोषण, कुपोषण, विस्थापन आदि समस्याओं को उजागर किया है। वैश्वीकरण के कारण आदिवासी समाज को अपने स्थान में विस्थापित होना पड़ा। उन्हें कमाने के लिए दूसरे शहरों में जाना पड़ा, जिसके कारण उनकी पारिवारिक स्थिति और भी तनावपूर्ण हो गई।

एस.एस. थामसन का भीली भाषा का विश्लेषण बताता है कि इस भाषा में 80 प्रतिशत शब्द संस्कृत भाषा से लिये गये है कोई 10 प्रतिशत शब्द अरबी और फारसी के है और 6 प्रतिशत शब्दों की उत्पत्ति अनिश्चित है, वे आग्रह पूर्वक कहते है कि सभी भीली बोलियों का आधार गुजराती है। अतः निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि भीली भाषा और बोलियों पर गुजराती तथा भीली प्रदेश की अन्य बोलियों का बड़ा प्रभाव है। अन्य बोलियों और भाषाओं में मराठी, मालवी, वागड़ी और मेवाड़ी है। यह बात सत्य है कि भील जिन–जिन क्षेत्रों में रहते है,उन क्षेत्रों में गैर–आदिवासियों की भाषा और बोलियों नें भी उन्हें प्रभावित किया है। विभिन्न स्थानों पर रहने वाले जनजातियों की बोलियों में अन्तर है समय के साथ ये लोग अपनी मूल भाषा भूल चुके है भीलों की 'भीली' भाषा गुजराती और राजस्थानी भाषा से कुछ मिलती है अब तो हिन्दी, उर्दू, मराठी, मालवी, निमाड़ी और अंग्रेजी के शब्द भी इनकी भाषा में शामिल हो चुके है।

वैश्वीकरण के कारण आदिवासी गाँवो की स्थिति दयनीय होती जा रही है। जब भारतीय राज्य आर्थिक 1990 के दशक में वैश्विक, राजनीतिक, आर्थिक शक्ति संगठनों,

संस्थाओं की प्रभुत्ववादी नीतियों के खिलाफ आवाज उठाते हुए दुनियाबी गठबंधनों और मंत्रों के साथ ये आंदोलन रूबरू हुए है। इस भूमण्डलीकरण के विरोध की प्रक्रिया में इन लघु आन्दोलनों ने लोकतन्त्र के नये विमर्श और राजनीतिक नवाचार विकसित कर राजनीति को राजनीतिक दल तथा चुनावी प्रतिनिधि संस्थाओं के घेरे में आगे विस्तार प्रदान किया है। सरकार ने गरीब आदिवासियों के विकास हेतू अनेक योजनाएं बनाई है परन्तु यह विकास की गंगा अभी तक उनके द्वार तक नहीं पहुंच पायी है। भ्रष्टाचार रूपी रुकावट उन्हें घेरे हुयी है। आधारभूत सुविधाओं, मानवाधिकारों, लोकतंत्र में भागीदारी आदि की बातें तो बहुत दूर वरन इस समुदाय का अस्तित्व ही गहरे संकट में डाल दिया। वैश्वीकरण के इस युग में आदिवासियों का वनों से प्रतीकात्मक संबंधों पर भी प्रभाव पडा है। वर्तमान समय में आदिवासी समाज की स्थिति पहले से खराब होती जा रही है। उनसे वह सब कुछ छिनता जा रहा है, जिसे प्राप्त करने का वह हकदार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. शर्मा, विशाल (2014) ''आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति'' नई दिल्ली, स्वराज प्रकाशन, पृ.सं. 107––109
2. मिश्रा, राजेन्द्र (2008) ''जनजातीय विकास के नये आयाम'' एपीएच पब्लिशिंग कॉरपोरेशन नई दिल्ली पृ.सं. 23–25
3. दास, शिवतोष (1965) '' भारत की आदिवासी जनजाति'', प्रकाशन आगरा पृ.सं. 46–47
4. काले, मालिनी (1987) ''भील संगीत और विवेचन'' हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर पृ. सं. 87–90
5. राठौड़, अजय सिंह (1999) ''भील जनजाति शिक्षा और आधुनिकीकरण'' हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर पृ.सं. 113–115
6. डाबी, प्रेमचन्द (2007) ''जनजातीय लोक साहित्य'' अंकुर प्रकाशन, उदयपुर पृ.सं. 42–44
7. व्यास, आशुतोष (2009) ''जनजातीय समाज और प्राथमिक शिक्षा'' हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर पृ.सं. 203–205
8. जैन, नेमीचन्द (1964) '' भील भाषा, साहित्य और संस्कृति'' भैयालाल प्रकाशन इन्दौर (मध्यप्रदेश), पृ. 4 पृ.सं. 71–72

9. भट्ट, नीरजा (2007) ''18वीं व 19वीं शताब्दी में राजस्थान का भील समाज'' हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, पृ.सं. 29–30
10. मीणा, जगदीश चन्द्र (2003) '' भील जनजाति का सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन'' हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, पृ.सं. 142–143